By SATYABHAMA CHANDRA
Department of Psychology
APSM College, Baraura, Begusarai
LNMU, Darbhanga, Bihar

B.A- III (H) Paper- VI^th Date -10/04/21

Scanned by TapScanner

* Historical Context of Organizational Behaviour

यद्यपि संगठनात्मक व्यवहार के बीज 200 से भी पहले ही लगाए गए परन्तु वर्तमान संगठनात्मक व्यवहार वास्तव में 20 वीं शताब्दी की उपज है। संगठनात्मक व्यवहार की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को अपनी सुविधा के लिए निम्नांकित चार भागों में विभाजित किया जा सकता है:

(i) The Early Era (प्रारंभिक युग)
(ii) The Classical Era (क्लासिकी युग)
(iii) The Behavioural Era तथा (व्यवहारात्मक युग) तथा
(iv) The Modern Era (आधुनिक युग)

(i) प्रारंभिक युग → संगठनात्मक व्यवहार को एक व्यवहारपरक विज्ञान के रूप में विकसित होने के प्रारंभिक युग में मुख्य से तीन व्यक्तियों ने योगदान किया, जिनके नाम हैं Adam Smith, Charles Babbage तथा Robert Owen.

(a) Adam Smith → Adam Smith का मुख्य योगदान क्लासिकी आर्थिक सिद्धांत के संदर्भ में है। लेकिन 1776 में उन्होंने श्रम-विभाजन के महत्व को उजागर किया और संगठन में इसके लाभों पर प्रकाश डाला। उन्होंने अपने अध्ययन के आलोक में प्रमाणित किया कि श्रम-विभाजन से प्रत्येक कर्मचारी के कौशल तथा दक्षता को बढ़ाकर तथा कार्यों में अदल-बदल में खर्च होने वाले समय तथा श्रम को बचाकर कार्य-उत्पादकता

को बढ़ाया जा सकता है। Smith द्वारा प्रस्तुत कार्य विशिष्टीकरण के आर्थिक लाभों से 20वीं शताब्दी को दौरान उत्पादन प्रक्रियाओं की व्यापक विकास में काफी सहायता मिली।

(b) Charles Babbage → ब्रिटेन के गणित के प्रोफेसर Charles Babbage ने एडम स्मिथ के द्वारा प्रस्तुत श्रम विभाजन के लाभों को और भी अधिक विस्तार से प्रस्तुत किया। उन्होंने 1832 श्रम-विभाजन के निम्नलिखित लाभों पर बल दिया —

(i) श्रम विभाजन से किसी कार्य को सीखने के लिए अपेक्षित श्रम घटता है।

(ii) सीखते समय सामग्रियों की क्षति को दूर करने में यह सहायक होता है।

(iii) उच्च स्तरीय कौशलों को प्राप्त करने में यह सहायक होता है।

(iv) विशिष्ट कार्यों के साथ लोगों के कौशलों एवं शारीरिक योग्यताओं का मिलान करने में यह सहायक होता है।

(c) Robert Owen → रॉबर्ट ओवेन ने भी अपने तौर पर संगठनात्मक व्यवहार के विकास में योगदान दिया। उन्होंने 1789 में अपना प्रथम कारखाना स्थापित किया। संगठनात्मक व्यवहार के इतिहास में उनका नाम इसलिए प्रसिद्ध है कि वह प्रथम उद्योगपति थे जिन्होंने यह

महसूस किया कि किस प्रकार बढ़ते हुए कारखाना तंत्र के कारण कर्मचारियों की प्रतिष्ठा घटती जा रही है। उन्होंने उद्योग में बच्चों की नियुक्ति, कर्मचारी के रूप में करने, 13 घंटे कार्य-अवधि प्रतिदिन की व्यवस्था, दयनीय कार्य परिस्थितियाँ आदि का जोरदार विरोध किया। उन्होंने कारखाने के भौतिक पर्यावरण को उन्नत बनाने, अच्छी मशीनों की व्यवस्था करने आदि पर बल दिया।

Satyendra Sharma
10/04/21